

महिला सशक्तिकरण और शिक्षा : आदर्शवाद, भौतिकवाद एवं सह-अस्तित्ववाद की शिक्षा-दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

सुनीता पाठक

मध्यस्थ दर्शन की अध्येता, सागर, मध्य प्रदेश

शोध सार

इस शोध का केंद्रीय प्रश्न यह है कि महिला सशक्तिकरण को केवल अधिकार, अवसर और संसाधन प्राप्त करने तक सीमित रखने के बजाय क्या उसे मानव चेतना, संबंधों में न्याय, परिवार में संतुलन, सामाजिक सहभागिता तथा प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व से भी जोड़ा जा सकता है। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में भी शिक्षा को केवल सूचना-संचय के रूप में नहीं देखा गया। तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षा को सत्य, धर्म, स्वाध्याय, कल्याण और आचरण से जोड़ता है—“सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।” [R-01]

इसी प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में समदृष्टि और लोकसंग्रह का विचार मिलता है। गीता 6.29 में आत्मा को सभी प्राणियों में और सभी प्राणियों को आत्मा में देखने की बात कही गई है [R-03]।

अतः इस शोध का उद्देश्य किसी एक विचारधारा को श्रेष्ठ घोषित करना नहीं, बल्कि तीनों दृष्टियों के आधार, मानव-दृष्टि, ज्ञान-दृष्टि, शिक्षा के उद्देश्य तथा महिला सशक्तिकरण की अवधारणा का तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

बीज शब्द- महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, आदर्शवाद, भौतिकवाद, सह अस्तित्ववाद, चेतना, संबंध, परिवार, सहभागिता।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन को समझने, ज्ञान प्राप्त करने, व्यक्तित्व विकसित करने तथा जीवन-व्यवहार को व्यवस्थित करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा को सामान्यतः साक्षरता, उच्च शिक्षा, रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता, राजनीतिक भागीदारी तथा निर्णय लेने की क्षमता से जोड़ा जाता है।

निस्संदेह ये सभी आयाम महत्वपूर्ण हैं, किंतु प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा की उपलब्धियों को केवल बाहरी अवसरों और संसाधनों की उपलब्धता से मापा जा सकता है? क्या शिक्षा मानव-मानव संबंध, परिवार, समाज तथा मानव-प्रकृति संबंध में संतुलन स्थापित करने में भी सक्षम होनी चाहिए?

प्रस्तुत शोध-पत्र में महिला सशक्तिकरण और शिक्षा को तीन दार्शनिक दृष्टियों—आदर्शवाद, भौतिकवाद तथा सह-अस्तित्ववाद—के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।

आदर्शवाद में शिक्षा को सत्य, सद्गुण, नैतिकता, आत्म-विकास और आदर्श जीवन से जोड़ा जाता है। भौतिकवादी दृष्टि में मानव जीवन की भौतिक परिस्थितियों, उत्पादन, सामाजिक संबंधों और वास्तविक जीवन-प्रक्रिया को ज्ञान तथा चेतना के अध्ययन का आधार माना जाता है। मार्क्स और एंगेल्स की The German Ideology में मानव की वास्तविक जीवन-प्रक्रिया और भौतिक परिस्थितियों को विचार एवं चेतना के अध्ययन का आधार बनाया गया है [R-09]।

सह-अस्तित्ववाद, जिसे मध्यस्थ दर्शन के संदर्भ में अस्तित्व-मूलक मानव-केंद्रित चिंतन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, मानव को ज्ञानावस्था में होने की पहचान के साथ अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में समझने की दिशा प्रस्तावित करता है। मध्यस्थ दर्शन के आधिकारिक संसाधनों में इसे “Existence based Human centric Contemplation” तथा अस्तित्व और सह-अस्तित्व के अध्ययन से संबंधित दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया है [R-10]।

इस शोध का केंद्रीय प्रश्न यह है कि महिला सशक्तिकरण को केवल अधिकार, अवसर और संसाधन प्राप्त करने तक सीमित रखने के बजाय क्या उसे मानव चेतना, संबंधों में न्याय, परिवार में संतुलन, सामाजिक सहभागिता तथा प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व से भी जोड़ा जा सकता है। शोध का उद्देश्य किसी एक विचारधारा को श्रेष्ठ घोषित करना नहीं, बल्कि तीनों दृष्टियों के आधार, मानव-दृष्टि, ज्ञान-दृष्टि, शिक्षा के उद्देश्य तथा महिला सशक्तिकरण की अवधारणा का तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

भारतीय आध्यात्मिक ग्रंथों में शिक्षा के साथ आचरण को भी महत्वपूर्ण माना गया है। तैत्तिरीयोपनिषद् में दीक्षांत उपदेश के रूप में “सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।” कहा गया है [R-01]। यहाँ शिक्षा, सत्य, धर्म और स्वाध्याय के बीच संबंध दिखाई देता है। इसी प्रकार “मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।” [R-01] में संबंधों और आचरण को शिक्षा का अंग बनाया गया है। इस प्रकार भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का यह पक्ष शोध के उस प्रश्न से संबंधित है कि शिक्षा का प्रमाण केवल ज्ञानार्जन में हो या जीवन-व्यवहार में भी दिखाई दे।

2. मानव की ज्ञान-यात्रा और शिक्षा

मानव ज्ञान अवस्था की इकाई है और वह सभी कुछ जानना, समझना चाहता है। इसलिए आदिकाल से ही मानव में शोधकिये है। इन शोधों के परिणाम स्वरूप मानव ने चार विषय पांच संवेदनाओं के ज्ञान को प्राप्त किया। इसकी उपलब्धि के रूप में सामान्य आकांक्षा अर्थात् भोजन, वस्त्र और आवास की व्यवस्था और महत्वाकांक्षा अर्थात् दूरगमन, दूरदर्शन दूर श्रवण की व्यवस्था के मानव ने कर ली है, स्त्री हो या पुरुष मानव की विकास यात्रा अभी यहीं तक पहुंची है। पूरा शिक्षा तंत्र चाहे भारतीय हो या पश्चिमी, उपलब्धि के रूप में आदर्शवादी विधि से त्याग करके देख लिया। भौतिकवादी विधि से भोग करके देख लिया। कुल मिलाकर मानव मानसिकता में त्याग, भोग बस यहीं तक की कल्पनाएं हैं। हालांकि मानव न्याय में जीना चाहता है, ज्ञानी होना चाहता है, विज्ञानी होना चाहता है। पर ज्ञान में विवेक स्पष्ट नहीं हुआ, विज्ञान में प्राकृतिक नियम स्पष्ट नहीं हुई जिसके कारण से—

मानव-मानव संबंध में असंतुलन है।

मानव-प्रकृति संबंध में भी असंतुलन है।

मानव-मानव संबंध में असंतुलन के कारण से भ्रम वश मानव ने प्रकृति में संतुलन को भी उत्पन्न कर दिया। विज्ञान शिक्षा से जो उपलब्धियां हुई हैं उसने मानव की इंद्रियों की क्षमता का ही विकास हुआ दिखता है, मानसिकताओं में आदिकाल से युद्ध और संघर्ष ही चल रहा है। मानव युद्ध और संघर्ष से मुक्ति चाहता है पर रास्ता भी नहीं मिला।

इन सभी विरोधाभासों के बीच हम सशक्तिकरण की बात कर रहे हैं, मजे की बात यह है कि हम संघर्ष और युद्ध को कमजोरी मानते ही नहीं। जबकि देखा जाए उपकार और सहायता की प्रवृत्तियां मानव में बलवती हैं और मानव युद्ध संघर्ष में जीना नहीं चाहता है उससे मुक्ति के प्रयास कर ही रहा है। कुछ लोगों को लगता है कि मुक्त नहीं हुआ जा सकता तो वह युद्ध संघर्ष को ही जीवन मानकर बैठे हैं।

जिन्हें लगता है कि मुक्त हुआ जा सकता है वह प्रयास में लगे हैं। स्थिति कुल इतनी है कि अभी रास्ता मानव जाति को मानव चेतना विधि से जीने का नहीं मिला। हम युद्ध और संघर्ष को मानवीय कार्यक्रम तो नहीं कह सकते, यह विचार करने योग्य है। यही मानसिकता व्यक्तिगत मानसिक द्वंद्व से लेकर पारिवारिक संघर्ष से लेकर सामुदायिक संघर्ष, राष्ट्रीय युद्ध और अंतरराष्ट्रीय संघर्ष के रूप में दिखाई देती है; और प्राकृतिक असंतुलन के चरम में स्थिति में हम आज पहुंच गए हैं। यहाँ भारतीय आध्यात्मिक संदर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता का समदृष्टि संबंधी विचार महत्वपूर्ण है। गीता 6.29 में कहा गया है-“सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि। ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥”[R-03]

इसका एक प्रचलित अर्थ है कि योगयुक्त व्यक्ति सभी प्राणियों में आत्मा और आत्मा में सभी प्राणियों को देखता है। शोध की दृष्टि से यह विचार इस प्रश्न को सामने रखता है कि यदि शिक्षा मानव में समदृष्टि विकसित करती है, तो क्या उसका प्रभाव मानव-मानव संबंधों में भी दिखाई देना चाहिए?

3. शिक्षा, संघर्ष और सशक्तिकरण का प्रश्न

भौतिकवादी शिक्षा से प्रकृति में असंतुलन चरम पर पहुंच गई है, इसको हम वर्तमान में देख पा रहे हैं। जबकि आदर्शवादी शिक्षा से प्रकृति को इतना नुकसान नहीं हुआ था। इससे मुक्ति का रास्ता मानव जाति को दिख नहीं रहा है। स्त्री और पुरुष दोनों के पास उत्तर नहीं है। जब प्रकृति ही असंतुलित रहेगी तो आर्थिक व्यवस्थाएं कैसे रहेंगी, यह विचारणीय है। हम इन सब स्थितियों पर विचार किए बगैर सशक्तिकरण का राग अलाप रहे हैं। हालांकि महिलाओं की स्थिति में क्रमशः सुधार हुआ है, लेकिन चाहे स्त्री को अधिकार मिले या चाहे पुरुष को, वस्तुस्थिति यही है कि मानव संघर्ष और युद्ध में भी और विवशता में जीने को बाध्य है।

यहाँ “सशक्तिकरण” की अवधारणा को दो स्तरों पर देखना आवश्यक है—

पहला—बाह्य सशक्तिकरण: शिक्षा, रोजगार, आय, संपत्ति, राजनीतिक भागीदारी, प्रशासनिक भागीदारी और निर्णय लेने की क्षमता।

दूसरा—आंतरिक अथवा मानवीय सशक्तिकरण: स्वयं को समझना, संबंधों को समझना, न्यायपूर्ण आचरण, उत्तरदायित्व, विवेक, समदृष्टि और सह-अस्तित्व को समझना।

UNESCO भी लैंगिक समानता को केवल शिक्षा में प्रवेश तक सीमित नहीं करता, बल्कि शिक्षा की विषय-वस्तु, शिक्षण-पद्धति, सीखने के परिणाम तथा शिक्षा के बाद जीवन और कार्य के अवसरों से जोड़ता है [R-08]।

4. महिला शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

हालांकि पूरी दुनिया में 19वीं सदी में महिलाओं को शिक्षा के अवसर उपलब्ध हुए और यह माना जाता था कि स्त्रियों में बौद्धिक क्षमता कम होती है। स्त्रियों ने सीमित अवसर और सीमित साधनों के साथ असाधारण रूप से सभी क्षेत्रों में अपने आप को वैसे ही प्रस्तुत किया जैसे कोई पुरुष शरीर में जन्म लेने वाला मानव संतान प्रस्तुत करता है। यहां तक कि सागर की गहराइयों से लेकर अंतरिक्ष की ऊंचाइयों में भी अनेक महिलाओं ने अपनी भागीदारी प्रस्तुत कर लिंगभेद से उपजी सभी मान्यताओं को ध्वस्त किया। भारत में महिला शिक्षा की जगह प्राचीन काल से ही देखने को मिलती है। वैदिक काल में स्त्री शिक्षा और सामाजिक स्वतंत्रता का युग स्वर्ण युग माना जाता है; इसमें गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, आपला जैसी विदुषी महिलाओं ने न केवल वैदिक ज्ञान प्राप्त किया बल्कि शास्त्रार्थों में भी भागीदारी की।

बृहदारण्यकोपनिषद् की परंपरा में मैत्रेयी का याज्ञवल्क्य के साथ ब्रह्मविद्या संबंधी संवाद मिलता है [R-02]। बृहदारण्यक उपनिषद् के उपलब्ध पाठ में मैत्रेयी को ब्रह्मविद्या से संबंधित संवाद में सहभागी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह संदर्भ महिला के बौद्धिक एवं दार्शनिक व्यक्तित्व को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि स्त्रियां वेद, दर्शन, मीमांसा के अतिरिक्त नृत्य, संगीत, चित्रकला की शिक्षा भी ग्रहण करती थी।

संदर्भ-सावधानी: इस कथन के लिए शोध-पत्र के अंतिम संस्करण में संबंधित शतपथ ब्राह्मण के सटीक काण्ड/अध्याय/कंडिका का उल्लेख करना उचित होगा। अतः इसे यहाँ [R-04] के अंतर्गत रखा गया है।

कालांतर से समाज में संरचनात्मक परिवर्तन के साथ मानसिकताओं में जो परिवर्तन हुआ, उससे स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आने लगी। उत्तर वैदिक काल में धार्मिक व्याख्या ने पितृसत्तात्मक प्रवृत्तियों को बल दिया। मध्यकाल में इस गिरावट से गंभीर परिणाम सामने आए और सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों ने महिलाओं को शिक्षा, सार्वजनिक जीवन और संपत्ति के अधिकारों से वंचित कर दिया।

ब्रिटिश काल में राजा राममोहन राय जैसे समाज सुधारकों की अगुवाई में सामाजिक परिवर्तन की नींव रखी हुई। धीरे-धीरे सती प्रथा जैसी कुरीतियों पर प्रतिबंध लगा। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे मनीषियों ने विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा को लेकर आवाज उठाई। महाराष्ट्र में महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने बालिकाओं की शिक्षा के लिए स्कूल स्थापित किया और दलित तथा स्त्री अधिकारों के लिए आंदोलन चलाया।

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, अरुणा आसफ अली, सरोजिनी नायडू जैसी कई महिलाओं ने न केवल भागीदारी की बल्कि नेतृत्व भी किया।

5. शोध की पृष्ठभूमि

महिला सशक्तिकरण आधुनिक सामाजिक विमर्श का एक महत्वपूर्ण विषय है। शिक्षा को महिला सशक्तिकरण का प्रमुख साधन माना गया है, क्योंकि शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, अभिव्यक्ति और निर्णय-क्षमता प्रदान करती है।

UNESCO के अनुसार शिक्षा में लैंगिक समानता केवल विद्यालय में प्रवेश तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा की विषय-वस्तु, शिक्षण-पद्धति, सीखने के परिणामों तथा शिक्षा के बाद के जीवन और कार्य-अवसरों तक विस्तृत है [R-08]।

UNESCO के उपलब्ध विवरण के अनुसार विश्व में वयस्कों में बुनियादी साक्षरता की कमी का बोझ महिलाओं पर असमान रूप से अधिक है; UNESCO लगभग दो-तिहाई वयस्क निरक्षरों को महिलाओं के रूप में दर्ज करता है [R-08]।

इससे स्पष्ट होता है कि महिला सशक्तिकरण को केवल विद्यालय में प्रवेश या डिग्री प्राप्त करने के प्रश्न के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध आदर्शवाद, भौतिकवाद और सह-अस्तित्ववाद की शिक्षा-दृष्टियों की तुलना करता है।

6. शोध की समस्या

शिक्षा के विस्तार के साथ महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, प्रशासन, विज्ञान, तकनीक, राजनीति, कला और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी बढ़ी है। फिर भी महिला सशक्तिकरण की चर्चा में कई मूलभूत प्रश्न बने हुए हैं।

पहला प्रश्न है—क्या शिक्षा केवल बाहरी अवसर प्रदान करने का माध्यम है अथवा वह मानव को स्वयं, संबंधों और अस्तित्व को समझने में भी सक्षम बनाती है?

दूसरा प्रश्न है—क्या आर्थिक स्वतंत्रता अपने आप में संबंधों और परिवार में न्याय की गारंटी देती है?

तीसरा प्रश्न है—क्या महिला और पुरुष को केवल सामाजिक-आर्थिक इकाई के रूप में देखने से मानव की पूर्ण पहचान स्पष्ट हो सकती है?

चौथा प्रश्न है—यदि शिक्षा व्यक्ति की मानसिकता में परिवर्तन करती है, तो क्या उस परिवर्तन का प्रमाण उसके व्यवहार और संबंधों में भी दिखाई देना चाहिए?

इन्हीं प्रश्नों के आधार पर इस शोध में तीन दार्शनिक दृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

7. शोध के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के संबंध को दार्शनिक दृष्टि से समझना।
- आदर्शवादी शिक्षा की मूल अवधारणाओं का अध्ययन करना।
- भौतिकवादी शिक्षा की मानव एवं ज्ञान संबंधी दृष्टि को समझना।

- मध्यस्थ दर्शन में प्रस्तुत सह-अस्तित्ववादी शिक्षा-दृष्टि का अध्ययन करना।
- तीनों दृष्टियों में मानव, ज्ञान, शिक्षा, प्रकृति और संबंधों की अवधारणा की तुलना करना।
- महिला सशक्तिकरण को केवल आर्थिक अथवा राजनीतिक भागीदारी से आगे मानव-केंद्रित दृष्टि से समझना।
- शिक्षा के परिणाम को मानव आचरण, परिवार, समाज और प्रकृति के संदर्भ में देखने की संभावनाओं का अध्ययन करना।
- महिला एवं पुरुष दोनों के लिए समान मानवीय आचार संहिता की पहचान की अवधारणा का परीक्षण करना।

8. शोध-पद्धति

यह शोध मुख्यतः दार्शनिक, तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें तीन प्रमुख वैचारिक धाराओं—आदर्शवाद, भौतिकवाद और सह-अस्तित्ववाद—की शिक्षा-दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। मध्यस्थ दर्शन के संदर्भ में ए. नागराज के मूल साहित्य और आधिकारिक उपलब्ध संसाधनों को आधार बनाया गया है। मध्यस्थ दर्शन की आधिकारिक वेबसाइट इसे “अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन” के रूप में प्रस्तुत करती है और शिक्षा, स्वराज्य व्यवस्था तथा मानव के विभिन्न आयामों को इससे जोड़ती है [R-10]।

भौतिकवादी दृष्टि के संदर्भ में मार्क्स एवं एंगेल्स की *The German Ideology* को आधार बनाया गया है। इसमें वास्तविक, सक्रिय मानव व्यक्तियों और उनके जीवन-प्रक्रिया से इतिहास तथा चेतना के अध्ययन की शुरुआत की जाती है [R-09]। महिला शिक्षा और लैंगिक समानता के व्यापक संदर्भ में UNESCO के शिक्षा संबंधी दस्तावेजों का उपयोग किया गया है।

9. आदर्शवाद की शिक्षा-दृष्टि

आदर्शवाद शिक्षा को केवल बाहरी ज्ञान या कौशल अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं मानता, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक विकास, नैतिकता, सत्य, सद्गुण और आदर्श जीवन से जोड़ता है। आदर्शवादी परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को उच्चतर मूल्यों की ओर उन्मुख करना है। प्लेटो के *Republic* में शिक्षा का संबंध आत्मा को सत्य और “Good” की ओर उन्मुख करने से जोड़ा गया है। इस दृष्टि में शिक्षा का महत्व इस बात में है कि व्यक्ति केवल जानकार न बने, बल्कि सत्य और सद्गुण के आधार पर जीवन जीने में सक्षम हो।

महिला शिक्षा के संदर्भ में आदर्शवादी दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह हो सकता है कि महिला को केवल आर्थिक उत्पादन की इकाई के रूप में नहीं, बल्कि नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक व्यक्तित्व के रूप में देखा जाए। इस दृष्टि में शिक्षा का प्रश्न केवल यह नहीं है कि महिला कितनी आय अर्जित करती है, बल्कि यह भी है कि उसका व्यक्तित्व, विवेक, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व किस प्रकार विकसित होता है।

किन्तु प्रस्तुत शोध की आलोचनात्मक पृष्ठभूमि में यह प्रश्न उठता है कि यदि आदर्शों की शिक्षा दी जाती है, तो क्या उन आदर्शों का प्रमाण सामाजिक संबंधों में दिखाई देता है? यहीं से आदर्शवादी शिक्षा की समीक्षा का प्रश्न सामने आता है। प्रस्तुत शोध में यह प्रश्न उठाया गया है कि यदि आदर्शवादी शिक्षा ने मानव को आदर्श जीवन की ओर उन्मुख किया, तो फिर सामाजिक विभाजन, जाति, संप्रदाय, नस्ल, रंग और लिंग आधारित भेद क्यों बने रहे। यह प्रश्न शोध के लिए महत्वपूर्ण है, यद्यपि इसके उत्तर को ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय प्रमाणों के साथ अलग-अलग संदर्भों में जाँचना आवश्यक होगा। भारतीय आध्यात्मिक संदर्भ में तैत्तिरीयोपनिषद् का “सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।” आदर्शवादी शिक्षा की उस दिशा को समझने में सहायक है जिसमें शिक्षा के साथ नैतिक आचरण और स्वाध्याय को जोड़ा गया है [R-01]।

10. भौतिकवाद की शिक्षा-दृष्टि

भौतिकवादी दृष्टि मानव के वास्तविक जीवन, उत्पादन, सामाजिक संबंधों और भौतिक परिस्थितियों को अध्ययन का महत्वपूर्ण आधार बनाती है। मार्क्स और एंगेल्स की *The German Ideology* में कहा गया है कि मानव इतिहास का प्रथम आधार जीवित मानव व्यक्तियों का अस्तित्व है और मानव के वास्तविक जीवन तथा भौतिक परिस्थितियों को समझे बिना इतिहास और चेतना को समझना संभव नहीं है [R-09]।

इसी ग्रंथ में उनका प्रसिद्ध प्रतिपादन है: “Life is not determined by consciousness, but consciousness by life.” अर्थात् जीवन की वास्तविक परिस्थितियों और जीवन-प्रक्रिया को चेतना के निर्माण को समझने का महत्वपूर्ण आधार माना गया है [R-09]।

भौतिकवादी शिक्षा की इस दृष्टि से महिला शिक्षा को आर्थिक स्वतंत्रता, श्रम, उत्पादन, रोजगार, सामाजिक संरचना और संसाधनों की उपलब्धता से जोड़ा जा सकता है। महिलाओं की आर्थिक भागीदारी ने अनेक समाजों में उनकी सार्वजनिक भूमिका का विस्तार किया है। शिक्षा ने महिलाओं के लिए पेशेवर अवसर, प्रशासनिक भागीदारी, विज्ञान और तकनीक तथा विभिन्न रोजगार क्षेत्रों में प्रवेश के अवसर बढ़ाए हैं। लेकिन केवल भौतिक संसाधनों की उपलब्धता से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि मानव संबंधों के सभी प्रश्न हल हो जाते हैं। यही वह बिंदु है जहाँ प्रस्तुत शोध आर्थिक सशक्तिकरण और मानवीय मानसिकता सशक्तिकरण के बीच अंतर को विचार का विषय बनाता है।

11. भारतीय आध्यात्मिक ग्रंथों में शिक्षा, आचरण और समानता

भारतीय आध्यात्मिक साहित्य को महिला सशक्तिकरण के अध्ययन में केवल धार्मिक सामग्री के रूप में नहीं बल्कि शिक्षा, आचरण, संबंध और मानव-दृष्टि के वैचारिक स्रोत के रूप में भी देखा जा सकता है।

11.1 तैत्तिरीयोपनिषद्

तैत्तिरीयोपनिषद् के शिक्षावल्ली में शिक्षा के बाद विद्यार्थी को—

“सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।” का निर्देश दिया गया है [R-01]।

इसके आगे—

“मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।” का निर्देश मिलता है [R-01]।

इसका शोध-संदर्भ यह है कि शिक्षा को केवल रोजगार-कौशल के बजाय सत्य, धर्म, स्वाध्याय और संबंधों के आचरण से जोड़ा गया है।

11.2 बृहदारण्यकोपनिषद् और मैत्रेयी

बृहदारण्यकोपनिषद् में मैत्रेयी का याज्ञवल्क्य के साथ दार्शनिक संवाद भारतीय परंपरा में महिला की दार्शनिक जिज्ञासा का महत्वपूर्ण उदाहरण है [R-02]। उपलब्ध पाठ-स्रोत में मैत्रेयी को ब्रह्मविद्या से संबंधित संवाद में सहभागी बताया गया है। यह उदाहरण महिला शिक्षा को केवल सामाजिक उपयोगिता के प्रश्न से आगे ज्ञान की खोज से जोड़ने की संभावना प्रस्तुत करता है।

11.3 श्रीमद्भगवद्गीता

गीता 5.18 में विद्या-विनय सम्पन्न व्यक्ति के संदर्भ में “समदर्शिनः” का विचार प्रस्तुत किया गया है—
“विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥” [R-03]

गीता 6.29 में भी सभी प्राणियों में आत्मा और आत्मा में सभी प्राणियों को देखने की समदृष्टि प्रस्तुत की गई है [R-03]।

गीता 3.20 में लोकसंग्रह के लिए कर्म करने की बात आती है—“कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि॥” [R-03]

इन संदर्भों से शोध में यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तिगत उपलब्धि के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व और समदृष्टि भी होना चाहिए या नहीं।

12. सह-अस्तित्ववाद और मध्यस्थ दर्शन की शिक्षा-दृष्टि

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में समझने तथा मानव को ज्ञानावस्था में पहचानने का प्रयास किया गया है। मध्यस्थ दर्शन में इसे “अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन” कहा गया है और “अस्तित्व सहअस्तित्व है” को इसके प्रमुख सूत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है [R-10]।

प्रस्तुत शोध में मध्यस्थ दर्शन के निम्न मूल वाक्यों को केंद्रीय संदर्भ के रूप में लिया गया है—

“रहस्य मूलक आदर्शवादी चिंतन विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया।”

“आदर्शवादी शास्त्रों एवं रहस्य मूलक ईश्वर केन्द्रित चिंतन ज्ञान तथा परंपरा के अनुसार - ज्ञान अव्यक्त अनिर्वचनीया।”

“भौतिकवाद के अनुसार यंत्र को ज्ञान का आधार माना | इन्द्रिय क्षमता को बढ़ाता है यंत्र | जबकि, यंत्र को आदमी ही बनाता है।”

“विज्ञान को ही ज्ञान को स्वरूप माना... इस विधि से विज्ञान पद्धति भौतिक-रासायनिक संसार तक गिरफ्त होकर रह गया।”

“विकल्प के रूप में अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद में मानव को ज्ञानावस्था में होने का पहचान किया एवं कराया।”

“मानव ही ज्ञाता (जानने वाला), सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व जानने-मानने योग्य वस्तु अर्थात् जानने के लिए संपूर्ण वस्तु है यही दर्शन ज्ञान है...”

“ज्ञान वचनीय, समझने योग्य, समझाने योग्य, जीने योग्य वस्तु के रूप में पहचान में आया है...”[R-10]

इन कथनों का मूल स्रोत मध्यस्थ दर्शन की आधिकारिक सामग्री में उपलब्ध है, जहाँ आदर्शवादी और भौतिकवादी पद्धतियों की समीक्षा के बाद अस्तित्व मूलक मानव-केंद्रित चिंतन को विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन कथनों के आधार पर सह-अस्तित्ववादी दृष्टि में शिक्षा केवल सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं रह जाती। शिक्षा का उद्देश्य अस्तित्व, मानव, संबंध और जीवन के स्वरूप को समझना तथा उस समझ का व्यवहार में प्रमाण प्रस्तुत करना बनता है। इस दृष्टि से महिला सशक्तिकरण को केवल “महिला बनाम पुरुष” के प्रश्न में सीमित करने के बजाय “मानव की ज्ञानावस्था” के संदर्भ में समझने का प्रयास किया जाता है।

13. सह-अस्तित्ववादी शिक्षा की वैकल्पिक दृष्टि

सह-अस्तित्ववाद शिक्षा के संबंध में एक वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि में शिक्षा की दो अपेक्षाओं को विशेष रूप से विचारणीय माना जा सकता है—

पहली अपेक्षा—यथार्थ की समझ। मानव स्वयं को, अस्तित्व को, जीवन को, संबंधों को और प्रकृति को समझे।

दूसरी अपेक्षा—समझ का जीवन में प्रमाण। जो समझ में आया है, वह व्यवहार, संबंध, परिवार, समाज, उत्पादन, न्याय और प्रकृति के साथ व्यवहार में दिखाई दे।

मध्यस्थ दर्शन में ज्ञान को “वचनीय, समझने योग्य, समझाने योग्य, जीने योग्य” वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया है [R-10]।

इस दृष्टि से महिला सशक्तिकरण का प्रश्न भी पुनर्परिभाषित हो सकता है।

महिला का सशक्त होना केवल इसलिए पर्याप्त नहीं माना जाएगा कि उसे अवसर मिला, नौकरी मिली या आर्थिक स्वतंत्रता मिली; बल्कि यह भी देखा जाएगा कि—

क्या उसे स्वयं की पहचान और गरिमा का बोध है?

क्या वह संबंधों को न्यायपूर्ण ढंग से समझती है?

क्या परिवार में उसकी भागीदारी सम्मान और विश्वास पर आधारित है?

क्या पुरुष और महिला दोनों के लिए समान मानवीय आचरण का आधार उपलब्ध है?

क्या शिक्षा मानव-प्रकृति संबंध में संतुलन की दिशा देती है?

क्या आर्थिक गतिविधि आवश्यकता और समृद्धि के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व को भी जोड़ती है?

मध्यस्थ दर्शन में व्यक्ति में समाधान, संबंधों में तृप्ति, परिवार में मूल्य-निर्वाह, समाज में अभय, सार्वभौम व्यवस्था और प्रकृति में सह-अस्तित्व जैसे आयामों को एक साथ रखा गया है [R-10]।

14. आदर्शवाद, भौतिकवाद एवं सह-अस्तित्ववाद: तुलनात्मक अध्ययन

आधार

आदर्शवाद

भौतिकवाद

सह-अस्तित्ववाद

मानव-दृष्टि

नैतिक/आध्यात्मिक व्यक्तित्व

सामाजिक-भौतिक परिस्थितियों में स्थित मानव

ज्ञानावस्था का मानव

ज्ञान का आधार

सत्य, आत्मा, आदर्श, उच्च मूल्य

वास्तविक जीवन, उत्पादन, सामाजिक संबंध

अस्तित्व, जीवन, मानव और सह-अस्तित्व

शिक्षा का लक्ष्य

सद्गुण एवं आदर्श जीवन

वास्तविक जीवन के लिए ज्ञान एवं कौशल

समझ, ज्ञान, विवेक और मानवीय आचरण

महिला शिक्षा

नैतिक एवं बौद्धिक विकास

आर्थिक एवं सामाजिक भागीदारी

मानव के रूप में समान ज्ञान एवं आचरण

संबंध

नैतिक/आदर्श संबंध

सामाजिक-भौतिक संबंध

मूल्य एवं न्यायपूर्ण संबंध

प्रकृति

विभिन्न आदर्शवादी परंपराओं में आध्यात्मिक/नैतिक संदर्भ

उत्पादन एवं भौतिक परिस्थितियों का आधार

सह-अस्तित्व एवं संतुलन

सशक्तिकरण



चरित्र एवं नैतिक विकास
संसाधन, श्रम और आर्थिक स्वतंत्रता
समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व
शिक्षा का प्रमाण
आदर्श जीवन
व्यवहारिक/सामाजिक जीवन
समझ का आचरण में प्रमाण

यह तालिका किसी दृष्टि को श्रेष्ठ घोषित करने के लिए नहीं बल्कि उनके वैचारिक अंतर को स्पष्ट करने के लिए प्रस्तुत की गई है।

15. महिला सशक्तिकरण : उपलब्धियाँ और शेष प्रश्न

अभी हम एक समाधान सोचते हैं, 10 समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। समस्या यदि खड़ी होती है तो क्या उसे समाधान कहेंगे? मानव संतुलन में जीना चाहता है। कोई भी असंतुलन परिवार समाज को सशक्त नहीं बनाता और परिवार और समाज के बिना मानव सशक्त होता नहीं है। हालांकि वर्तमान तक जो शिक्षा रही, पहले आदर्शवादी शिक्षा जहां यह माना गया कि इस अस्तित्व की प्रत्येक क्रिया व घटना का नियंत्रक कोई ईश्वर जैसी ताकत है, किंतु यह सब आज तक रहस्य में ही है; हालांकि अभी भी परिवार व्यवस्था आदर्शवाद द्वारा स्थापित किए गए मापदंडों के आधार पर ही चल रही है। लेकिन अब वह विघटन के कगार पर है। कारण यह है कि आदर्शवाद द्वारा जिन आश्वासनों को दिया गया, यह पूरे नहीं हुआ। मानव पापी से पुण्यशील बना नहीं, स्वार्थी से परमार्थी बना नहीं। यह वर्तमान आदर्शवादी शिक्षा की समीक्षा है।

आदर्शवादी शिक्षा के आधार पर मानव जाति में हजारों वर्षों तक जी कर देखा। चाहे स्त्री हो या पुरुष, सभी की मानसिकता में नस्ल, रंग, जाति, संप्रदाय भेद की मानसिकताएं हैं, जिससे श्रेष्ठ और नेष्ठ के आधार पर विचार, कार्य, व्यवहार की परंपराएं हैं।

प्रत्येक स्त्री पुरुष इस कारण से द्वंद का शिकार है। परिवार में असहमतियां चरम पर हैं, संबंधों में बिखराव है। समाज समुदाय मानसिकता में है। राष्ट्रों में संसाधनों के कब्जे को लेकर होड़ है, लड़ाई है। अंतर्राष्ट्रीय स्थितियां भी तीसरे विश्व युद्ध के आसन्न संकट की स्थिति में हैं। अर्थात् मानव संबंध में असंतुलन चरम पर है और मानव प्रकृति से संबंध में असंतुलन चरम पर है। आदर्शवादी व्यवस्थाएं अर्थात् परिवार, समुदाय व्यवस्था, धर्म व्यवस्था अंतिम दौर में हैं। मानव मानसिकताएं भौतिकवादी शिक्षा के कारण से लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद शिकार हो गई हैं। यह वर्तमान में शिक्षा का प्रभाव दिखाई दे रहा है।

महिलाओं को भले ही भागीदारी कम मिली हो पर मानसिकताओं में लाभोन्माद, कामोन्माद और भोगोन्माद का प्रभाव तो महिलाओं में भी दिख ही रहा है। अभी तक की आदर्शवादी और भौतिकवादी शिक्षा का मूल्यांकन करें तो पाएंगे कि आदर्शवाद एक अच्छे आदमी या मानव की पहचान की आशा को बना करके रखा, शुभकामनाओं

को बनाकर के रखा; भौतिकवाद ने सामान्य आकांक्षा अर्थात भोजन, वस्त्र, आवास को सुलभ कराने में भूमिका निभाई। दूरगमन, दूरसंचार, दूरदर्शन के यंत्रों की उपलब्धियां भी हैं, किंतु प्राकृतिक असंतुलन ने मानव जाति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।

समीक्षा करें तो यह पाएंगे कि आदर्शवाद रहस्य के जंगल में फंस गया, भौतिकवाद संग्रह-सुविधा के अंतहीन जाल में ग्रस्त है। इस सबके बीच शिक्षा के द्वारा हम महिला सशक्तिकरण की बातें कर रहे हैं।

मैं यह बातें इसलिए कह रही हूँ कि जो उपलब्धियां हुई हैं उन पर प्रश्न नहीं है, जो असंतुलन खड़ा हुआ है उससे संतुलन की दिशा में कैसे आगे बढ़ें, इस पर विचार करने की आवश्यकता के आधार पर मैं इन मुद्दों को आपके सम्मुख रख रही हूँ।

16. शिक्षा और महिला सशक्तिकरण : पुनर्विचार

महिला सशक्तिकरण की अब तक की यात्रा में अनेक उपलब्धियां हुई हैं। महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि हुई है, सार्वजनिक जीवन में भागीदारी बढ़ी है और अनेक क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी क्षमता प्रमाणित की है।

UNESCO के अनुसार शिक्षा में लैंगिक अंतर को कम करने में पिछले दशकों में प्रगति हुई है, फिर भी वैश्विक स्तर पर पूर्ण समानता अभी प्राप्त नहीं हुई है [R-08]।

इसलिए सशक्तिकरण की चर्चा को केवल “अवसर मिला या नहीं मिला” से आगे बढ़ाकर “अवसर मिलने के बाद मानव जीवन में क्या परिवर्तन हुआ” के प्रश्न से जोड़ना उपयोगी हो सकता है। यही प्रस्तुत शोध का केंद्रीय बिंदु है।

महिला और पुरुष दोनों को यदि मानव के रूप में देखा जाए तो शिक्षा का उद्देश्य दोनों के लिए समान मानवीय आधार पर निर्धारित किया जा सकता है। इसमें महिला की विशिष्ट सामाजिक परिस्थितियों और ऐतिहासिक वंचना को नकारना उद्देश्य नहीं है; बल्कि यह देखना उद्देश्य है कि अधिकार और अवसर मिलने के साथ संबंध, न्याय, परिवार, समाज और प्रकृति के प्रश्न भी शिक्षा में शामिल हों।

17. सह-अस्तित्ववादी दृष्टि से महिला सशक्तिकरण की संभावित पुनर्परिभाषा

सह-अस्तित्ववादी दृष्टि में महिला सशक्तिकरण को निम्न आयामों में देखा जा सकता है—

1. **ज्ञान में सशक्तिकरण-** महिला स्वयं, जीवन और अस्तित्व को समझने वाली ज्ञानवान इकाई हो।
2. **संबंध में सशक्तिकरण-** संबंध अधिकार और प्रभुत्व के बजाय मूल्य, विश्वास, सम्मान और न्याय पर आधारित हों।
3. **परिवार में सशक्तिकरण-** परिवार में महिला और पुरुष दोनों की भूमिका लिंग-आधारित प्रभुत्व के बजाय पारस्परिक उत्तरदायित्व से निर्धारित हो।
4. **आर्थिक सशक्तिकरण-** आर्थिक स्वतंत्रता के साथ आवश्यकता, समृद्धि और सामाजिक उत्तरदायित्व का संतुलन हो।

5. सामाजिक सशक्तिकरण- महिला समाज में केवल प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाली इकाई न होकर मानव समाज की सार्थक भागीदार हो।

6. प्रकृति के साथ संबंध- सशक्तिकरण ऐसा हो जो प्रकृति के संतुलन के विरुद्ध न जाए।

7. चेतना का विकास- शिक्षा केवल जानकारी और कौशल न देकर मानवीय चेतना के विकास की दिशा भी प्रस्तुत करें। मध्यस्थ दर्शन में मानव के लिए समाधान, संबंधों में तृप्ति, भौतिक समृद्धि, समाज में अभय और प्रकृति में सह-अस्तित्व को परस्पर संबंधित आयामों के रूप में प्रस्तुत किया गया है [R-10]।

18. निष्कर्ष / समरी

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला सशक्तिकरण और शिक्षा का संबंध बहुआयामी है। महिला शिक्षा ने महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। शिक्षा ने साक्षरता, ज्ञान, रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता, प्रशासनिक भागीदारी, विज्ञान, तकनीक और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी के द्वार खोले हैं। फिर भी केवल इन उपलब्धियों को महिला सशक्तिकरण का पूर्ण प्रमाण मानना पर्याप्त नहीं होगा।

आदर्शवाद ने शिक्षा को सत्य, सद्गुण, नैतिकता और आदर्श जीवन से जोड़ने का प्रयास किया। उसकी महत्वपूर्ण देन यह है कि उसने शिक्षा को केवल बाहरी कौशल तक सीमित नहीं रखा और मानव के नैतिक एवं आंतरिक विकास को महत्व दिया। भौतिकवाद ने मानव के वास्तविक जीवन, उत्पादन, श्रम, सामाजिक संबंध और भौतिक परिस्थितियों को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इससे शिक्षा और महिला सशक्तिकरण को आर्थिक एवं सामाजिक संरचना से जोड़कर देखने की संभावना विकसित हुई। किन्तु प्रस्तुत शोध का प्रश्न यह है कि क्या नैतिक आदर्श और भौतिक उपलब्धि दोनों के बावजूद मानव-मानव संबंध और मानव-प्रकृति संबंध में पूर्ण संतुलन स्थापित हुआ है?

भारतीय आध्यात्मिक ग्रंथों में शिक्षा के साथ आचरण को जोड़ा गया है। तैत्तिरीयोपनिषद् का “सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।” शिक्षा को सत्य, धर्म और स्वाध्याय से जोड़ता है [R-01]।

बृहदारण्यकोपनिषद् में मैत्रेयी का दार्शनिक संवाद महिला की ज्ञान-जिज्ञासा और दार्शनिक सहभागिता का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है [R-02]।

श्रीमद्भगवद्गीता का “समदर्शन” तथा “लोकसंग्रह” संबंधी विचार शिक्षा को व्यक्तिगत उन्नति के साथ व्यापक सामाजिक दृष्टि से जोड़ने का आधार प्रदान करता है [R-03]।

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्व को एक वैकल्पिक, अस्तित्व-मूलक मानव-केंद्रित चिंतन के रूप में प्रस्तुत करता है और मानव को ज्ञानावस्था में समझने की दिशा देता है [R-10]।

इस शोध की केंद्रीय स्थापना यह नहीं है कि आदर्शवाद या भौतिकवाद की उपलब्धियों को अस्वीकार कर दिया जाए। बल्कि प्रश्न यह है कि उनकी उपलब्धियों और सीमाओं को समझते हुए शिक्षा को किस प्रकार ऐसी दिशा दी जाए जिसमें ज्ञान, विवेक, विज्ञान, संबंध, न्याय, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व एक साथ विचार के विषय बनें।

अतः महिला सशक्तिकरण को केवल महिला को पुरुष के समान अवसर देने तक सीमित न रखकर मानव को मानवीयता, न्यायपूर्ण संबंध, परिवार में संतुलन, समाज में अभय और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व में जीने योग्य बनाने की शिक्षा से जोड़ना एक महत्वपूर्ण शोध-विषय बन सकता है। इस दृष्टि से सह-अस्तित्ववाद शिक्षा के क्षेत्र में एक वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करता है।

अंततः प्रश्न यह नहीं है कि महिला कितनी शक्तिशाली हुई, बल्कि यह भी विचारणीय है कि शिक्षा के माध्यम से मानव कितना न्यायपूर्ण, विवेकपूर्ण, संबंध-संपन्न और सह-अस्तित्वपूर्ण हुआ। यही प्रश्न महिला सशक्तिकरण को मानव सशक्तिकरण से जोड़ने की दिशा में आगे का शोध क्षेत्र प्रस्तुत करता है।

19. संदर्भ-संकेत / Reference Codes

[R-01] तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, 1.11.1-2।

प्रमुख संदर्भ: “सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।” तथा “मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।”

वैदिक हेरिटेज पोर्टल पर तैत्तिरीयोपनिषद् का पाठ उपलब्ध है।

[R-02] बृहदारण्यकोपनिषद्, विशेषतः याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद।

महिला की दार्शनिक जिज्ञासा एवं ब्रह्मविद्या संबंधी संवाद के संदर्भ में।

[R-03] श्रीमद्भगवद्गीता।

अध्याय 3, श्लोक 20 — लोकसंग्रह एवं कर्म।

अध्याय 5, श्लोक 18 — समदर्शन।

अध्याय 6, श्लोक 29 — सर्वभूतों में आत्मदर्शन।

Gita Supersite, IIT Kanpur।

[R-04] शतपथ ब्राह्मण।

प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं वैदिक परंपरा के संदर्भ में। अंतिम प्रकाशन संस्करण में संबंधित काण्ड/अध्याय/कंडिका का सटीक उल्लेख किया जाना अपेक्षित है।

[R-05] मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक 56।

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।”

यह संदर्भ महिला के सम्मान संबंधी पारंपरिक वैचारिक संदर्भ के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

[R-06] प्लेटो, Republic.

शिक्षा, सत्य, सद्गुण, न्याय और आदर्श राज्य के संदर्भ में। प्लेटो के शिक्षा संबंधी विचारों में व्यक्ति के बौद्धिक एवं नैतिक विकास को महत्व दिया गया है।

[R-07] UNESCO, Gender Equality and Empowerment / Gender and Education.

शिक्षा में लैंगिक समानता, महिलाओं की शिक्षा, साक्षरता तथा शिक्षा के परिणामों के संदर्भ में।

[R-08] UNESCO, Global Education Monitoring / Gender Equality in Education.

लैंगिक समानता, शिक्षा तक पहुँच, completion तथा वैश्विक लैंगिक शिक्षा-अंतर के संदर्भ में।

[R-09] Karl Marx & Friedrich Engels, The German Ideology.

वास्तविक जीवन-प्रक्रिया, भौतिक परिस्थितियों और चेतना के संबंध के संदर्भ में। प्रमुख कथन: “Life is not determined by consciousness, but consciousness by life.”

[R-10] ए. नागराज, मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद), अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन।

मुख्य संदर्भ—“अस्तित्व सहअस्तित्व है”, मानव को ज्ञानावस्था में समझना, अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन, ज्ञान की वचनीय/समझने योग्य/जीने योग्य पहचान तथा शिक्षा-व्यवस्था के संबंध में प्रतिपादन। आधिकारिक मध्यस्थ दर्शन संसाधन।

[R-11] ए. नागराज, जीवन विद्या : एक परिचय.

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद और अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के परिचय के संदर्भ में।

[R-12] ए. नागराज, विकल्प और जीवन विद्या अध्ययन बिंदु.

मानव चेतना, ज्ञान, विवेक तथा अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के संदर्भ में।

[R-13] IJRCT, “भारत में महिला सशक्तिकरण : सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन”, 2025.

20. अंतिम शोध-सार

इस शोध का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को केवल शिक्षा, रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता अथवा राजनीतिक भागीदारी के आँकड़ों से पूर्णतः नहीं समझा जा सकता। आदर्शवाद शिक्षा में मूल्य, नैतिकता और आदर्श जीवन की अपेक्षा प्रस्तुत करता है। भौतिकवाद मानव के वास्तविक जीवन, उत्पादन और भौतिक परिस्थितियों को समझने का आधार प्रस्तुत करता है। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा शिक्षा को सत्य, धर्म, स्वाध्याय, संबंध और समदृष्टि से जोड़ने वाले अनेक संदर्भ प्रस्तुत करती है। मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद शिक्षा को अस्तित्व-मूलक मानव-केंद्रित चिंतन से जोड़ते हुए मानव को ज्ञानावस्था में समझने की दिशा प्रस्तुत करता है। इसलिए महिला सशक्तिकरण के अध्ययन में एक समग्र प्रश्न यह बनता है— क्या शिक्षा मानव को केवल अधिक सक्षम बनाती है, या अधिक मानवीय भी बनाती है?

यदि शिक्षा का अंतिम प्रमाण मानव के जीवन, संबंध, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ उसके व्यवहार में दिखाई देता है, तो महिला सशक्तिकरण का अध्ययन भी इन्हीं व्यापक आयामों से जुड़कर अधिक समग्र रूप ग्रहण कर सकता है। ऊपर के पाठ में आपके मूल विचारों को रखते हुए संदर्भों को [R-01] से [R-13] तक कोड किया गया है। विशेष रूप से तैत्तिरीयोपनिषद्, गीता और मध्यस्थ दर्शन के संदर्भ आधिकारिक/प्राथमिक या उच्च-विश्वसनीय स्रोतों से जाँचे गए हैं। मध्यस्थ दर्शन की आधिकारिक साइट स्वयं इसे “अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन” कहती है और मानव, शिक्षा, संबंध तथा प्रकृति के संतुलन को उसके व्यापक प्रतिपादन से जोड़ती है।